समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्ष:– 2019–20 पृष्ठ:– 4 अंक :– 15 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

विपक्ष नकारात्मकता त्यागें

राष्ट्रपति के अभिभाषण पर प्रधानमंत्री का धन्यवाद प्रस्ताव

प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर राज्यसभा में धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा का जबाव देते हुए गालिब का यह शेर पढ़ा. .....'ता उम्र गालिब यह भूल करता रहा, धूल चेहरे पर थी, आईना साफ करता रहा।'

उन्होंने विपक्ष द्वारा लोकसभा चुनाव नतीजों को लेकर भाजपा पर किये गये हमले पर कहा, ''यह कहा जाता है कि आप तो चुनाव जीत गये हैं, लेकिन देश हार गया है। ऐसा कहना लोकतंत्र और देश की जनता का अपमान है। यह बात देश के लोगों को गम्भीर रूप से सोचने पर मजबूर करती है। क्या वायनाड, रायबरेली, बहरामपुर या अमेठी में हिन्दुस्तान हार गया है। कॉंग्रेस हारी तो देश हार गया। देश यानी कॉंग्रेस, कॉंग्रेस यानी देश। अहंकार की एक सीमा होती है। 55 साल तक देश पर राज्य करने वाली पार्टी 17 राज्यों में एक सीट नहीं जीत पायी।''

उन्होंने कहा, 'इस प्रकार की भाषा बोल कर देश के मतदाताओं का अपमान बड़ी पीड़ा देता है। यहाँ तक कह दिया गया कि किसान दो–दो हजार में बिक गया। यह कहना देश के किसानों का अपमान है। इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करके कॉंग्रेस ने 15 करोड़ किसान परिवारों का अपमान किया है।'

उन्होंने कहा कि लोग उन दिनों को नहीं भूले हैं जब दिल्ली की सड़कों पर सिखों को जिन्दा जला दिया गया था। उन्होंने कांग्रेस से कहा कि 'अगर यही आदर्श आपके थे तो आप अपने गिरेबाँ में झाँकते। इन दंगों के आरोपी आप की पार्टी में बड़े–बड़े पदों पर हैं। उन्होंने कहा कि हम मानते हैं कि यदि सरदार बल्लभ भाई पटेल देश के प्रधानमंत्री होते तो जम्मू–कश्मीर समस्या नहीं होती।'

उन्होंने कहा कि यह कहना बिल्कुल गलत है कि झारखण्ड भीड़ हिंसा का अड्डा हो गया है। दोषियों को कड़ी सजा मिलनी चाहिए। इस प्रकरण को लेकर झारखण्ड राज्य को दोषी ठहराना उचित नहीं है।

लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली करारी हार के लिये ईवीएम पर 'ठीकरा' फोड़ने को लेकर प्रधानमंत्री ने विपक्ष को 'नकारात्मकता' त्यागने और देश की विकास यात्रा में सकारात्मक योगदान देने की नसीहत दी।

रंग बदलते चेहरे

लोकसभा चुनाव जब चल रहे थे, तो पांचवां चरण समाप्त होने के बाद न्यूयार्क(अमरीका)से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक 'टाइम' में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का चित्र मुख्य–पृष्ठ पर प्रकाशित हुआ। मुख्य–पृष्ठ पर चित्र के साथ 'भारत को विभाजित करने वाला प्रमुख व्यक्ति' टिप्पणी भी थी। इस शीर्षक का एक लेख पत्रिका के भीतर के पृष्ठों पर था जिसे एक जिहादी ने लिखा था। इस जिहादी लेखक के पिता पाकिस्तानी और माँ भारत की सेकुलर–लिबरल जमात की एक नामी महिला तवलीन सिंह। इससे पता चलता है कि अमरीका में हर क्षेत्र में जिहादियों ने घुसपैठ कर ली है। अमरीका की हालत उस कस्तूरी मृग की तरह है जो कस्तूरी को सब तरफ खोजता रहता है जब कि तेज खुशबू वाली कस्तूरी उसकी नाभि में ही छिपी होती है।

खैर, लोकसभा चुनावों के परिणाम आते ही 'टाइम' ने पलटी खाई और नये अंक में श्री नरेन्द्र मोदी को **'भारत को एकता के सूत्र में मजबूती से बाँधने वाला'** बता दिया। मुरादाबादी लोटे की तरह लुढ़कने वाली इस पत्रिका के बारे में भी अब कुछ जान लेना चाहिए। इसका प्रकाशन न्यूयार्क से 1923 में शुरू हुआ। लम्बे समय तक 'टाइम' और 'न्यूजवीक' अमरीका की प्रमुख साप्ताहिक पत्रिकाएं रहीं। कुछ वर्षों पहले न्यूजवीक 'डिजिटल' हो गई और उसका छपना बन्द हो गया। इसी के साथ इसके एशियाई संस्करण के सम्पादक रफीक जकारिया 'टाइम' के एशिया में बिकने वाले संस्करण के मुख्य सम्पादक बन गये। इस साप्ताहिक का यूरोपीय संस्करण भी लंदन से प्रकाशित होता है। सभी संस्कारणों की प्रचार संख्या बीस लाख के ऊपर है।

अब प्रश्न उठता हे कि टाइम में प्रकाशित किसी लेख या सामग्री से भारत का मीडिया क्यों इतना प्रभावित हो जाता है? क्या भारत से प्रकाशित होने वाली किसी पत्रिका को अमरीका में इतना महत्व दिया जाता है? इसके पीछे मैकाले की पैदा की गई वह हीन भावना है, कि जो गोरी–चमड़ी वाले ने कह दिया है मानो वह ईश्वर की वाणी है। हमारे सेकुलर–लिबरल बन्धु, मीडिया के लोग इस हीन भावना से बुरी तरह जकड़े हुए हैं। इसलिये न्यूयार्क, लंदन, पेरिस, बर्लिन आदि का कोई समाचार पत्र या पत्रिका भारत के बारे में कुछ लिख देते हैं तो अधिकांश भारतीय मीडिया उस पर ऐसे टूट पड़ता है मानो ईश्वर के किसी दूत ने वह लिखा या बोला हो।

यह भी विचार का विषय है कि खुद अमरीका की क्या स्थिति है? अमरीका के किसी न किसी हिस्से में प्रतिदिन गोली–काण्ड होते रहते हैं, कभी स्कूल का कोई छात्र सहपाठियों को गोली मार देता है तो कभी कोई कर्मचारी अपने सहयोगियों पर गोलियाँ बरसा देता है। मात्र डेढ़ सौ साल पहले तक गोरी चमड़ी वाले अमरीकी काले लोगों को गुलाम बना कर रखते थे, ईसवी सन् 1865 में राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अमरीका में गुलामी की प्रथा समाप्त की। इसकी कीमत उन्हें अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। आज भी अमरीका में अफ्रीकी मूल के नीग्रो लोगों से भेद–भाव किया जाता है। उन्हें घृणा से 'निगर' कह कर पुकारा जाता है।

अमरीका की आबादी भारत की एक चौथाई है और जितनी विविधता भारत में है उसका एक अंश भी अमरीका में नहीं है। संसाधनों के मामले में यह कोसों आगे है। जितनी समस्याओं, चुनौतियों का सामना भारत कर रहा है वैसी समस्याएं अमरीका ने कभी झेली ही नहीं। फिर भी अपराध, हिंसा, हत्या, बलात्कार आदि भारत से अधिक अमरीका में होते हैं। पहले अमरीका के मूल निवासियों, फिर दक्षिण अमरीका, फिर अफ्रीका का जम कर शोषण कर अमरीका सम्पन्न बना है। फिर भी आर्थिक रूप से अमरीका लड़खड़ा रहा है, भारत से अधिक बेरोजगारी वहाँ है और वहाँ के राष्ट्रपति को अमरीकी ही सबसे अधिक गालियाँ दे रहे हैं, दिये जा रहे हैं।

अतः टाइम जैसी पत्रिकाओं को न तो गम्भीरता से लिये जाने की आवश्यक़ता है और न ही भारत को टाइम जैसों की टिप्पणियों की जरूरत है। दूसरों को उपदेश देने में कुशल लोग तो बहुतायत में मिल जाते हैं, लेकिन अपना सुधार करने वाले कम मिलते हैं।

विश्व में भारत की बढ़ती साख सुरक्षा परिषद के लिये समर्थन

पन्द्रह सदस्यीय सुरक्षा परिषद में सन् 2021–2022 के कार्यकाल के लिये पाँच अस्थायी सदस्यों को चुनाव जून–2020 के आसपास होना संभावित है। इन सदस्यों का कार्यकाल जनवरी–2021 से शुरू होगा।

एशिया प्रशांत समूह ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अस्थायी सदस्य के रूप में 2021–22 के दो साल के कार्यकाल के लिये भारत की उम्मीदवारी का अनुमोदन सर्वसम्मति से संयुक्त राष्ट्र में किया। सभी55 सदस्यों को उनके समर्थन के लिये धन्यवाद।

भारत की उम्मीदवारी का समर्थन करने वाले 55 देशों में अफगानिस्तान, बाँग्लादेश, भूटान, चीन, इंडोनेशिया, ईरान, जापान, कुवैत, किर्गिस्तान, मलेशिया, मालदीव, म्याँमार, नेपाल, पाकिस्तान, कतर, सऊदी अरब, श्रीलंका, सीरिया, तुर्की, संयुक्त अरब अमीरात और वियतनाम शामिल है।

प्रत्येक वर्ष 193 सदस्यीय संयुक्त राष्ट्र महासभा दो साल के कार्यकाल के लिये संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यू एन एस सी) के पाँच अस्थायी सदस्यों का चुनाव करती है। यू.एन.एस.सी. के पाँच स्थायी सदस्य चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन और अमेरिका हैं। यू.एन.एस.सी. की दस अस्थायी सीटों का बंटवारा क्षेत्रीय आधार पर किया गया है–अफ्रीका और एशिया के हिस्से में पाँच जबकि पूर्वी यूरोप के हिस्से में एक लेटिन अमेरिका और कैरेबियाई देशों के हिस्से में दो, पश्चिमी यूरोप के हिस्से में दो सीटें हैं।

इससे पहले भारत 1950–51, 1967–68, 1972–73, 1977–78, 1984–85, 1991–92, और हाल ही में 2011–12 में सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य कह चुका है।

असाधारण राष्ट्रभक्त थे विनायक दामोदर सावरकर

अनुपम त्याग, अदम्य साहस, महान वीरता एवं उत्कट देशभक्ति के पर्यायवाची बन चुके असाधारण व्यक्तित्व के स्वामी प्रातः स्मरणीय वीर सावरकर आधुनिक भारत के निर्माताओं की अग्रणी पंक्ति के ऐसे चमकते नक्षत्र हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन अर्थात् जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत जीवन का एक–एक क्षण राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रसेवा, साहित्य–सेवा, समाज सेवा और हिन्दू समाज के पुनरूत्थान के लिए संघर्ष में व्यतीत कर दिया और भारतीय स्वाधीनता संग्राम के जन्मजात योद्धा, हिन्दू हृदय सम्राट स्वातंत्र्यवीर सावरकर के नाम से इतिहास में अमर हो गये। हिन्दुस्तान को 'अखण्ड राष्ट्र' के रूप में पुनर्स्थापित– प्रतिष्ठित कराने का महान स्वप्न देखते–देखते ही वे इस नश्वर संसार से विदा हो गये।

प्रथम महानायक

प्रातः स्मरणीय वीर सावरकर जी भारतीय इतिहास के ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिन्हें कई अर्थों में प्रथम होने का सौभाग्य प्राप्त है। **वीर सावरकर भारत के प्रथम छात्र थे, जिन्हें देशभक्ति के आरोप में कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया।**

वे प्रथम ऐसे युवक थे, जिन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का साहस दिखाया।

वे प्रथम ऐसे बैरिस्टर थे, जिन्हें वकालत की परीक्षा पास करने के बाद भी प्रमाण पत्र नहीं दिया गया।

वे पहले ऐसे भारतीय थे, जिन्होंने लंदन में 1857 के तथाकथित गदर को भारतीय स्वाधीनता संग्राम का नाम दिया।

असाधारण व्यक्तित्व और महान कृतित्व के स्वामी सावरकर विश्व के प्रथम ऐसे लेखक हैं जिनकी पुस्तक '1857 का स्वातंत्र्य समर' प्रकाशन के पूर्व ही जब्त कर ली गयी।

सावरकर ऐसे प्रथम भारतीय हैं, जिन पर हेग के अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में अभियोग चला।

संसार के इतिहास में वे प्रथम महापुरूष हैं, जिनके बंदी विवाद के कारण फ्रांस के प्रधानमंत्री एम. बायन को त्याग पत्र देना पड़ा।

वे पहले ऐसे कैदी थे, जिन्होंने अण्डमान जेल की दीवारों पर कील की लेखनी से साहित्य सृजन किया।

महान राष्ट्रपुरूष स्वातंत्र्य वीर सावरकर प्रथम ऐसे मेधावी व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने कोल्हू में बैल की जगह जुतने, चूने की चक्की चलाने, रामबांस कूटने, कोड़ों की मार सहने आदि क्रूरतम शारीरिक व मानसिक पीड़ा सहते हुए भी दस–सहस्त्र पंक्तियों को कंठस्थ कर के यह सिद्ध कर दिया कि सृष्टि के आदि काल में आर्यों ने वाणी (कण्ठ) के द्वारा बीस हजार से अधिक मंत्रों वाले वेदों को किस प्रकार जीवित रखा।

वे प्रथम राजनीतिक नेता थे, जिन्होंने समस्त संसार के समक्ष भारत देश को हिन्दू राष्ट्र सिद्ध करके गाँधी जी को चुनौती दी थी।

वे प्रथम क्रान्तिकारी थे, जिन पर स्वतंत्र भारत की सरकार ने झूठा मुकदमा चलाया और बाद में निर्दोष साबित होने पर माफी माँगी। इस प्रकार कई अर्थों में प्रथम रहने वाले वीर सावरकर सत्य ही नित्य नमनीय व प्रातः स्मरणीय है।

रामायण-महाभारत के संस्कार

वीर भूमि महाराष्ट्र के नासिक जिले के एक छोटे से ग्राम भगूर में चितपावन वंशीय ब्राह्मण श्री दामोदर पंत सावरकर के घर 28 मई 1883 ई. को विनायक सावरकर का जन्म हुआ। बालक विनायक को बचपन में तात्या के नाम से भी पुकारा जाता था। विनायक के पिता दामोदर सावरकर एवं माता राधाबाई दोनों ही श्रीराम–कृष्ण के परम भक्त एवं दृढ़ हिन्दुत्वनिष्ठ विचारों वाले थे। बचपन से ही विनायक को उनके माता–पिता रामायण, महाभारत आदि की कथा के साथ महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी तथा गुरू गोविन्द सिंह की शौर्यगाथाएं सुनाया करते थे। बालक विनायक का मन व हृदय हिन्दू जाति के गौरवमयी इतिहास को सुनकर प्रफुल्लित व पुलकित हो उठता था और वे भी छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप की भांति वीर बनकर हिन्दू–पदपादशाही की स्थापना करने, विदेशी शासकों की सत्ता को चकनाचूर करके स्वतंत्र हिन्दू राष्ट्र का प्रण लेते।

राष्ट्रीयता की प्रबल भावना

बड़ा होने के साथ ही विनायक के हृदय में राष्ट्रीयता के बीजांकुर प्रस्फुटित हो पल्लवित व पुष्पित होते चले गये। नौ वर्ष की आयु पूरी करते–करते विनायक की माँ राधाबाई स्वर्गवासी हो गयीं। इस पर पिता दामोदर पंत ने दूसरा विवाह नहीं किया। राधाबाई के घरेलू कामों में रसोई तो उन्होंने स्वयं संभाल ली और शेष कार्य तीन पुत्रों में वितरित कर दिये। तात्या (विनायक)के जिम्मे कुलदेवी सिंहवाहिनी दुर्गा की उपासना, सेवा का काम आया। तात्याराव बड़ी श्रद्धा–भक्ति से कुल देवी माँ की पूजा–आराधना करने लगे। वे देवी की स्तुति में मराठी पद रचते और देवी की प्रतिमा के सम्मुख श्रद्धानत होकर माँ भारती को विदेशी साम्राज्य की जंजीरों से मुक्त कराने का वरदान मांगते थे।

समय पर बालक तात्या अर्थात् विनायक का गांव के विद्यालय में नामांकन करा दिया गया। विनायक ने छोटे–छोटे बालकों का समूह बनाकर धनुषबाण चलाना, तलवार चलाना सीखना प्रारम्भ कर दिया। बालक एकत्रित होकर दो समूह बना लेते और फिर छद्म अर्थात् नकली युद्ध करते।

बालक स्वयं ही नकली दुर्ग बनाकर उन पर आक्रमण–प्रत्याक्रमण करने, धनुष बनाकर पेड़ों के फल–फूलों पर निशाना साधने, लिखने की कलमों को भाला बनाकर युद्ध करने आदि युद्ध कौशल विद्याओं का शिक्षण, प्रशिक्षण प्राप्त करते। शीघ्र ही विनायक सभी बालकों के नेता बन गये। पांचवीं श्रेणी तक की पढ़ाई गांव में कर लेने पर विनायक को अंग्रेजी पढ़ने के लिए नासिक भेज दिया गया। नासिक में विनायक ने अपनी आयु के छात्रों की एक मित्र–मण्डली बनाकर उनमें राष्ट्रीय भावनाएं भरनी प्रारम्भ कर दीं। उन्हीं दिनों विनायक ने मराठी में देशभक्ति पूर्ण कविताएं लिखीं, जो मराठी की अनेक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं।

स्वाधीनता की प्रतिज्ञा

सम्पूर्ण भारत की तरह महाराष्ट्र में भी इन दिनों अंग्रेजी साम्राज्य के विरूद्ध एक लहर थी। युवकों में भी अंग्रेजी शासन के

शेष भाग पृष्ठ क्र. 4 पर

बोधकथा

मगध की वासवदत्ता उपवन विहार के लिए निकली। उसका साज–श्रृंगार उस राजवधू की तरह था, जो पहली बार ससुराल जाती है। एकाएक उसकी दृष्टि उपवन के किनारे स्फटिक शिला पर बैठे तरूण सन्यासी उपगुप्त पर गई। उन्होंने बाह्य सौंदर्य को अंतर्निष्ठ कर लिया था और उस आनंद में वे ऐसे निमग्न थे कि उन्हें बाह्य जगत की कुछ भी सुध–बुध न थी। वासवदत्ता को अपने सौंदर्य पर अभिमान था। उसे लगा कि उसकी उपस्थिति उपगुप्त की तपस्या को भंग कर देगी। वह उपगुप्त के समीप जा खड़ी हुई। उपगुप्त ने किसी की उपस्थिति को समीप महसूस कर अपने नेत्र खोले तो वासवदत्ता ने उनसे पूछा–''सन्यासी! क्या यह बताएंगे कि नारी का सर्वश्रेष्ठ आभूषण क्या है?'' उपगुप्त ने उत्तर दिया–''जो उसके सौंदर्य को सहज रूप से बढ़ा दे।''

वासवदत्ता ने पुनः प्रश्न किया–''सहज का क्या अर्थ है?'' उपगुप्त ने सौम्य मुस्कान के साथ कहा–''देवी! आत्मा जिन गुणों को बिना किसी बाह्य इच्छा, आकर्षण या भय के अभिव्यक्त करे, उसे ही सहज भाव कहते हैं। वह सौंदर्य जो बिना किसी कृत्रिमता के उपस्थित हो, वही नारी का सच्चा आभूषण है।''

तपस्वी का यह स्पष्ट उत्तर भी वासवदत्ता को समझ में न आया। उसने कहा–''कृपया पहेलियाँ न बुझाएँ एवं मुझे स्पष्ट समझाएँ। उपगुप्त बोले–''देवी, यदि आपके आभूषण, पद एवं प्रतिष्ठा आपसे ले लिए जाएँ तो आपका यह आकर्षण क्या शेष रहेगा?'' वासवदत्ता को यह सुनते ही ऐसा लगा, मानो किसी ने उसका अस्तित्व ही उससे छीन लिया हो। उसके मन की दशा को भाँपते हुए उपगुप्त बोले–''जिन बातों का अभिमान आपको है, वे सारे आधार कृत्रिम हैं। आत्मज्ञान ही मनुष्य का सच्चा सौंदर्य है। यदि आप सच्चे सौंदर्य की अभीप्सा रखती हैं तो अपने भीतर प्रवेश करके अपने जीवन के उद्देश्य को जानने का प्रयत्न करिए। आत्मज्ञान ही हमारा सच्चा सौंदर्य है।''

ज्ञान के प्रकाशपुंज का पर्व

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरू पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। इस पावन धरा पर इसी दिन उत्तरमीमांसा के प्रणेता ऋषि भगवान वेदव्यास का अवतरण हुआ था। एक द्वीप में उनका आविर्भाव हुआ था, इसलिए उन्हें द्वैपायन भी कहते हैं। उन्होंने वेद का वर्गीकरण कर उसको चार भागों में विभक्त किया। वेद का अर्थ ज्ञान होता है।

भगवान वेदव्यास ने ज्ञान के प्रकाश को प्रचारित–प्रसारित किया। उन्हें गुरू के रूप में वरेण्य किया जाता है;क्योंकि उन्होंने सबके अंतर में आवृत अज्ञान को, अंधकार को मिटाकर ज्ञान का आलोक फैलाया। गुरू को साक्षात परब्रह्म का स्वरूप माना जाता है। अपनी संस्कृति में गुरू और शिष्य के संबंध को सर्वश्रेष्ठ एवं दिव्य संबंध कहा गया है।

भारतीय संस्कृति में गुरू की महिमा अवर्णनीय एवं अपरंपार है। गुरू को स्वयं परमात्मा के समान माना जाता है। गुरू ज्ञान का प्रकाशपुंज है। गुरू सबसे पहले होता है, माता–पिता तो उसके पश्चात् होते हैं। इस पार्थिव काया का जन्म तो माता के गर्भ से होता है, परन्तु इस काया को संस्कारित कर अपने अभीष्ट लक्ष्य की ओर बढ़ाने का कार्य गुरू ही करता है। गुरू स्वयं वेद के समान होता है। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है। ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। ज्ञान अनन्त है, इसका कोई अंत नहीं है। वेद अपौरूषेय ज्ञान है, जिसे किसी भी प्रयास और पुरूषार्थ से पाना सम्भव नहीं है। यह तो गुरू–कृपा के द्वारा ही पाया जा सकता है। वेद स्वतःस्फूर्त ज्ञान है।

गुरूस्वरूप भगवान वेदव्यास ने इस अपौरूषेय एवं अप्रतिम ज्ञान को प्रकाशित किया। इस अखंड एवं एकांत ज्ञान का सरलीकरण करके उसको चार भागों में विभाजित किया। उन्होंने ऋक्, यजु, साम और अथर्ववेद के रूप में ज्ञान को वर्गीकृत किया। ज्ञान के मूलस्वरूप को सर्वसामान्य के मध्य प्रसारित किया, इसलिए उनको भगवान वेदव्यास कहा जाता है और उनके जन्मदिवस को गुरू पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है।

वेदव्यास जी ने वेदों के अलावा अठारह पुराण, महापुराण और ब्रह्मसूत्र आदि आर्ष ग्रंथों का सृजन किया–जो सम्पूर्ण मानवता के लिए पथ प्रदर्शन का कार्य करते हैं। भगवान वेदव्यास ने ज्ञान के दिव्य प्रकाश को सबके अंतर में प्रज्वलित किया। इसलिए गुरू के रूप में उनका वंदन किया जाता है। गुरू अंधकार से ज्ञान की ओर ले चलता है और मृत्यु से मोक्ष की ओर अग्रसर करता है।

गुरू ज्ञान का दिव्यपुंज है, ऊर्जा का स्वरूप है, करूणा और दया का स्त्रोत है। गुरू हमारी चेतना को परिष्कृत एवं परिमार्जित करता है और उसे दिव्य और पावन बनाता है। गुरू हमारे अंदर आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करके सत्य से, शिव से साक्षात्कार कराता है। गुरू ही आत्मचेतना को विकसित कर परमात्मचेतना में विलय–विसर्जन करने के लिए शिष्य को समग्र रूप से तैयार करता है।

गुरू के सान्निध्य से जड़वत् एवं पाषाण चेतना परिमार्जित होकर पारस बन जाती है और अपने परिकर एवं परिसर को आलोकित करती है। एक तरह से गुरू लोहे को पारस बना देता है; क्योंकि शिष्य की चेतना लोहे के समान मलिन होती है। उसे परिष्कृत करके पारस बनाने का कार्य गुरू के करूणामय एवं स्नेहिल हाथों से होता है।

गुरू के सान्निध्य से जीवन की दिशा और दशा, दोनों ही परिवर्तित होते हैं। गुरू शिष्य को अपने चेतनारूपी गर्भ में तब तक गढ़ता है, जब तक वह पूर्ण रूप से पावन, पवित्र एवं दिव्य न बन जाए। गुरू की कृपा और शिष्य का समर्पण, दोनों सम्मिलित रूप से शिष्य के जीवन का सम्पूर्ण रूपांतरण कर देते हैं। दृश्य रूप में गुरू की काया तो पंचभौतिक तत्वों से ही विनिर्मित होती है, परंतु वस्तुतः उसके अंदर परमात्मचेतना ही निवास किया करती है।

बाहरी कलेवर के रूप में गुरू जो दिखाई देता है, वास्तविक रूप से वह होता नहीं है, वह तो कुछ और ही होता है। इसलिए गुरू की काया पार्थिव नहीं, अपार्थिव होती है और उसकी चेतना ब्राह्मीचेतना से सराबोर रहती है। उसकी इसी ब्राह्मीचेतना के प्रभाव से शिष्य की पार्थिवचेतना रूपांतरित होती है।

अमूर्त ब्राह्मीचेतना जब रूपाकार होती है तो वह सद्गुरू के रूप में मूर्त होती है। शिष्य के लिए उस अमूर्त ब्राह्मीचेतना से साक्षत्कार एवं तदाकार होना सम्भव नहीं हो पाता है। वह तो मूर्तरूप की ही कल्पना कर सकता है और उसकी ही ध्यान–धारणा कर सकने में सक्षम होता है। शिष्य के द्वारा समस्त अस्तित्व के पुंजीभूतस्वरूप परमात्मा के प्रति समर्पण सम्भव नहीं है।

शिष्य तो अमूर्त की कल्पना नहीं कर सकता है। वह तो सहज–सरल साकार स्वरूप की कल्पना कर सकता है। समस्त मानवता से प्रेम करना सम्भव नहीं है उसके लिए। एक को प्रेम करके ही, एक के प्रति समर्पित हो करके ही, समस्त के अंदर अमूर्त की कल्पना सम्भव हो पाती है। इसलिए शिष्य मूर्तरूप से गुरू को समर्पण करता है और सद्गुरू उसे समष्टि चेतना के स्वरूप परमात्मा तक पहुंचा देता है।

समष्टि की यात्रा दुष्कर एवं दूभर होती है। इसमें बड़ा संघर्ष है। प्रतिपल–प्रतिक्षण नूतन चुनौतियों का सामना यहां करना पड़ता है। यह सर्वथा एक अज्ञात की यात्रा है, ऐसी यात्रा, जो शिष्य के द्वारा कभी की ही नहीं गई। इसलिए व्यष्टि से समष्टि की यात्रा में अनेक संघर्ष, चुनौतियाँ एवं कठिनाइयाँ बनी रहती है। शिष्य स्वयं इस यात्रा को नहीं कर सकता है। वह कहीं भी भटक सकता है, किसी अज्ञात चौराहे पर गलत दिशा में मुड़ सकता है, किसी कारण मन में आशंकित एवं आतंकित हो सकता है; क्योंकि इस यात्रा में पल–पल, क्षण–क्षण खतरा बना ही रहता है।

इस यात्रा में शिष्य के साथ सदा एक कुशल मार्गदर्शक की आवश्यकता पड़ती है और वह कुशल मार्गदर्शक सद्गुरू होता है, जो उसके साथ सदैव बना रहता है, पल भर भी उसे अपने से दूर नहीं करता। सद्गुरू शिष्य को अज्ञान से ज्ञान की ओर लेकर चलता है और उसे ज्ञान, भक्ति, प्रेम में प्रतिष्ठित कर देता हे; उसका परमात्मा में सायुज्य, समर्पण एवं विसर्जन कर देता है। शिष्य सद्गुरू में समा जाता है, विलीन हो जाता है।

सद्गुरू से मिलन ही परमात्मा से मिलन है। परमात्मा सद्गुरू के रूप में अवतरित होता है। देह से देहातीत की इस यात्रा में शिष्य को सर्वप्रथम अपने संकीर्ण स्वार्थ को त्यागना पड़ता है, अपने अहंकार को गलाना पड़ता है; क्योंकि स्वार्थ एवं अहंकार स्वयं के लिए सबसे घातक शत्रु हैं।

शिष्य के रूपांतरण के लिए इन दोनों को क्रमशः त्यागना होता है। स्वार्थ और अहंकार का विलय और विसर्जन किए बिना शिष्य में शिष्यत्व का उदय सम्भव नहीं है। यह इतना सहज भी नहीं है, बल्कि यह अत्यंत दुष्कर होता है; क्योंकि

शेष भाग पृष्ठ क्र. 4 पर

पृष्ठ क्रमांक 2 का शेष भाग

विरूद्ध रोष फैला हुआ था। ऐसे वातावरण में सन् 1897 में पूना में भयंकर प्लेग की बीमारी फैल जाने से लोगों में चिन्ता की लहर दौड़ गयी। बाल–वृद्ध, नर–नारी काल के ग्रास बनने लगे। अंग्रेज अधिकारियों के द्वारा प्लेग की रोकथाम के लिए कोई उपाये नहीं किये जाने के कारण जनता में अंग्रेजों के विरूद्ध क्षोभ की लहर और भी बेकाबू हो चली। चाफेकर बंधुओं ने जान हथेली पर रखकर अंग्रेज प्लेग कमिश्नर व एक अन्य अधिकारी आर्यस्ट को गोली का निशाना बना दिया। अंग्रेज अधिकारियों की हत्या से समस्त देश में तहलका मच गया। चाफेकर बंधुओं को फाँसी पर पटका दिया गया। इस समाचार से पूरे देश में अंग्रेजों के विरूद्ध रोष की प्रबल लहर दौड़ गयी।

समाचार–पत्र में इस समाचार को पढ़ विनायक का देशभक्त हृदय क्रोध से कांप उठा। इस घटना ने उनके हृदय में अंग्रेजी साम्राज्य के अत्याचारों के विरूद्ध विद्रोह के बीज बो दिये। **विनायक ने कुलदेवी दुर्गा की प्रतिमा के सम्मुख जाकर देश की स्वाधीनता के लिए जीवन के अन्तिम क्षणों तक सशक्त क्रान्ति का झंडा लेकर जूझते रहने की कठोर प्रतिज्ञा की।** अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए विनायक ने योजना बना सर्वप्रथम छात्रों को एकत्रित कर 'मित्र मेला' नामक संस्था बनायी और उसके तत्वावधान में गणेशोत्सव, शिवाजी महोत्सव आदि के कार्यक्रम आयोजित करके युवकों में राष्ट्रभक्ति की भावनाएं भरना प्रारम्भ किया।

सावरकर जी ने स्थान–स्थान पर जाकर युवकों को संगठित किया और उनमें देशभक्ति की भावना भरी। सावरकर जी के ओजस्वी भाषणों ने जनमानस में राष्ट्रप्रेम की चेतना जगा दी। उन्होंने भारत माँ को दासता की बेड़ियों में जकड़ने वाले अंग्रेजों के अत्याचारी साम्राज्य को चकनाचूर करके स्वाधीन राष्ट्र की स्थापना करने का आव्हान करते हुए कहा कि सशस्त्र क्रान्ति के बल पर इस विदेशी साम्राज्य का तख्ता पलटना है।

लोकमान्य तिलक से सम्पर्क

सन् 1901 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् सावरकर जी को पूना के फर्ग्यूसन कॉलेज में दाखित करा दिया गया। वहां भी सावरकर जी ने राष्ट्रभक्त छात्रों का एक दल बनाया। उन्होंने वहां भी कविताएं एवं लेख लिखकर युवकों में राष्ट्रीय भावनाएं भरनी प्रारम्भ कर दीं। उनकी रचनाएं उनेक मराठी पत्रों में प्रकाशित हुई और कई कविताओं पर उन्हें पुरस्कार भी मिले। काल के सम्पादक श्री परांजपे उनकी रचनाओं से अत्याधिक प्रभावित हुए और उन्होंने सावरकरजी का परिचय राष्ट्रभक्त बाल गंगाधर तिलक से करा दिया। अब सावरकर जी श्री तिलक एवं श्री परांजपे के निकट सम्पर्क में आने लगे। उनकी रचनाओं में युवकों के लिए देश पर मर–मिटने का आव्हान प्रति –ध्वनित होने लगा।

विदेश वस्त्रों की होली

सन् 1905 में सावरकर जी बी.ए. की तैयारी कर रहे थे। इसी बीच उन्होंने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का जोरदार आंदोलन चलाया। उन्होंने सबसे पहले पुणे के बीच बाजार में सार्वजनिक रूप से विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वयं श्री लोकमान्य तिलक ने की। तिलक जी सावरकर जी की इस सफलता पर बहुत प्रसन्न हुए। विदेश वस्त्रों की होली जलाने की घटना बिजली की तरह समस्त विश्व में फैल गयी।

समाचार पत्रों में इस घटना की काफी आलोचना –प्रत्यालोचनाएं हुई। परिणामस्वरूप फग्यफुसन कॉलेज के अधिकारियों ने सावरकर जी को कॉलेज से निष्कासित कर दिया। इस पर भी उनको मुम्बई विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा देने की अनुमति मिल गयी और उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।

सशस्त्र क्रांति का आह्वान

बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् सावरकर जी ने अपने विश्वस्त साथियों को एकत्रित करके एक गुप्त बैठक में भारत की स्वाधीनता के लिए सशस्त्र क्रान्ति को मूर्त रूप देने के लिए 'अभिनव भारत' नामक एक संस्था की स्थापना की। सावरकर जी ने स्थान–स्थान पर जाकर युवकों को संगठित किया और उनमें देशभक्ति की भावना भरी। सावरकर जी के ओजस्वी भाषणों ने महाराष्ट्र के जनमानस में राष्ट्रप्रेम की चेतना जगा दी। पुणे की एक सभा में भाषण देते हुए उन्होंने भारत माँ को दासता की बेड़ियों में जकड़ने वाले अंग्रेजों के अत्याचारी साम्राज्य को चकनाचूर करके स्वाधीन राष्ट्र की स्थापना करने का आव्हान करते हुए कहा कि सशस्त्र क्रान्ति के बल पर इस विदेशी साम्राज्य का तख्ता पलटना है।

शेष भाग पृष्ठ क्र. 3 का

यहां पल–पल स्वार्थ आ खड़ा होता है और अहंकार विषधर नाग की तरह सदा फन फैलाए खड़ा रहता है। सद्गुरू के प्रति असीम त्याग और सर्वस्व समर्पण के द्वारा ही इन दोनों से मुक्त हुआ जा सकता है। सद्गुरू के प्रति अगाध प्रेम से इस दुष्कर कार्य को आसान किया जा सकता है।

सद्गुरू शिष्य को प्रेम करना सिखाता है। सद्गुरू सिखाता है समर्पण। वह कहता है कि 'मैं' मैं नहीं हूँ, बल्कि साकार रूप में उस निराकार का प्रतिनिधि हूँ और तुम्हें साकार से होकर निराकार में समा जाना है। तुम आकार में निराकार को खोजो, तभी तुम्हारा निराकार से मिलन हो पाएगा। सद्गुरू कहता है मैं तो एक द्वारा हूँ व तुम्हें इस द्वारा से होकर गुजर जाना है।

नानक ने अपने मंदिरों को गुरूद्वारा कहा है। यह सर्वथा उचित है। गुरूद्वारा अर्थात् गुरू का द्वार। गुरू द्वार है, उससे तो जाना है, गुजर जाना है, परन्तु अगर तुम द्वारा से भी गुजरने को तैयार नहीं हो तो तुम परमात्मारूपी मंदिर में कैसे पहुंचोगे। सद्गुरू कहता है मैं तो केवल एक द्वार हूँ, परमात्मा ही एकमात्र मंदिर है। द्वारा से गुजरने के लिए तुम्हें झुकना पड़ेगा, झुककर जाना होगा।

स्वार्थ और अहंकार को लेकर गुरूरूपी इस द्वार से पार नहीं हुआ जा सकता है। स्वार्थ एवं अहंकार को विसर्जित करके ही परमात्मारूपी मंदिर में पहुंचा जा सकता है।

स्वामी सत्यमित्रानन्द ने निस्वार्थ भाव से समाज सेवा की : राजनाथ सिंह

स्वामी सत्यमित्रानंद को बुधवार देर शाम दशनामी सन्यास परंपरा के अनुसार भारत जन सेवा ट्रस्ट स्थित राघव कुटीर में विधिविधान से मंत्रोच्चर के साथ भू–समाधि दी गई। इस अवसर पर बड़ी तादाद में देश–विदेश से आए उनके भक्त मौजूद थे। राज्य सरकार की ओर से स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी के अंतिम संस्कार में राजकीय सम्मान गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। उत्तराखंड पुलिस ने उनके अंतिम संस्कार के वक्त हथियार उल्टे कर मातमी धुन बजाई।

उनके भू–समाधि समारोह में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह,उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तराखंड के मुख्मंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, उत्तराखंड की राज्यपाल बेबी रानी मौर्य, केंद्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति, योगगुरू स्वामी रामदेव, आचार्य बालकृष्ण, केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक समेत कई राजनीतिक हस्तियां और साधु–संत उनको श्रद्धांजलि देने हरिद्वारा पहुंचे। समाधि स्थल पर हेलिकाप्टर से फूलों की वर्षा भी की गई।

शोक सभा में देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री और भाजपा के के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की ओर से भेज गए पुष्पचक्र स्वामी सत्यमित्रानंद के पार्थिव देह पर अर्पित किए गए। श्रद्धांजलि सभा में पहुंचे रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने स्वामी जी के निधन को अपूरणीय क्षति बताया। उन्होंने कहा कि स्वामी जी निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा किया करते थे। सनातन धर्म के प्रचार–प्रसार के साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में उनके किए कार्य हमेशा याद किए जाएंगे। उन्होंने वनवासी और दलितों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए अहम कार्य किए।

उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ ने कहा कि स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी की गिनती विश्व के जाने–माने संतों में होती है। वे मानवतावादी थे। उनके समाज में दिए गए योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनके विचार हमेशा प्रासंगिक रहेंगे।

स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी के उत्तराधिकारी जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेषानन्द गिरी ने कहा कि वे अपने गुरू स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी जी के छोड़े गए सभी अधूरे कार्यों को पूरा करेंगे।

सूचना

कृपया आप अपना सुझाव महाकोशल संदेश के ई–मेल व्हाट्सअप नं. 9713223539 पर भेजें।

– सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा-
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com